

वंशी माहेश्वरी

57, मंगलवारा

पिपरिया, म.प्र. 461-775

फोन : 149

आदलीय राज साह,

मैं नहीं आ सका।

अब वह ठीक होना जा रहा है।

बिना दवा के है।

22 फरवरी को देर में ही जमोना है - मेरी शुआरायाँ हैं।  
इं दोरा आरु रोहिन आरु है।

आप के दिने दोनों पोटल (दीवार) आरु पं हैं।  
रोज 'बिंदु' से ऊपर ले रहा है।


इसी शास्त्र से मैं गरीब बनने से रहा है।

वहाँ न आने से इलाक है जो पीछर सारा रहा  
मेरा पक्ष।

अब तो पोटल से पक्ष भीतरगा। वहाँ आदलीय आयादी से  
मेरा दिनभू प्रमाण पड़ने।

पक्ष दे -

आपका -

  
वही/दमेरा

प्रत्यक्ष: आप का कंधा रहा गया था. 